

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

पवन प्रवाह

www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com
लखनऊ। सोमवार 07 से 13 मई-2018

9 सृजन प्रवाह

सामाजिक उत्थान में नवाचार व अन्वेषण का महत्व

भाग-04

पिछले अंक का शेष -

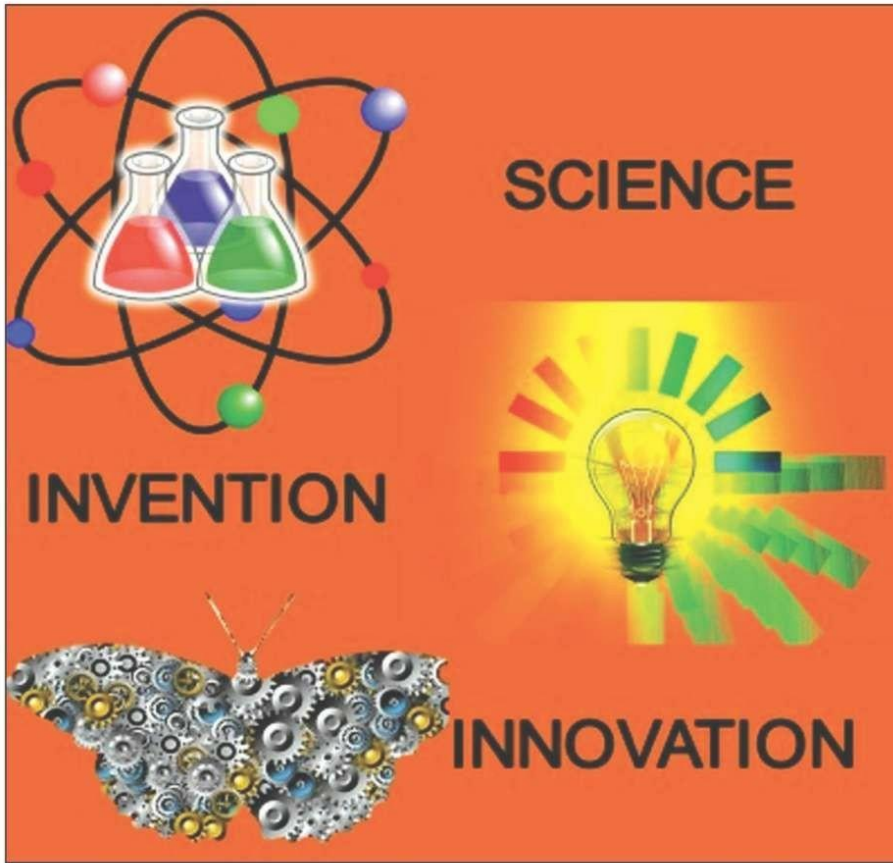
पर ये भी सही है कि अधिक प्रतियोगी अवसर समक्ष आ जाए तो यही नवाचार कर्मों को बन्द भी करवा सकता है। नौकरिया खत्म हो जाती है, उत्पाद या सेवाएँ प्रासंगिक नहीं रह जाती समग्र रोजगार प्रभाव क्या होगा यह श्रम पुनरावंटन के प्रभाव और प्रकृति पर निर्भर करेगा।

पर्यावरण चुनौतियाँ

नवाचार अब पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझने का महत्वपूर्ण औजार माना जाने लगा है। उदाहरणस्वरूप जलवायु परिवर्तन और वैश्विक ग्रीनहाउस गैस निर्गम और जैव विविधता को बनाए रखना इन सबसे नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। नवाचार पर्यावरणीय चुनौतियों में योगदान दे सकता है नयी तकनीकों और गैर-तकनीकी नवाचारों को प्रस्तुत कर। ये गैर तकनीकी नवाचार विशेषकर, संगठनात्मक नवाचार पर्यावरणीय तकनीकी नवाचारों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप, प्रमाण ये बताते हैं कि "जलवायु परिवर्तन" में किए गए नवाचार बड़े रहे हैं। हाल के वर्षों में उत्पादक कम्पनियों स्थायी उत्पादन की ओर बढ़ रही है। ये एकीकृत तरीकों को अपनाकर उत्पाद को ज्यादा टिकाऊ और प्रभावशाली बना रहे हैं।

सामाजिक चुनौतियाँ

नवाचार सामाजिक से निपटता है। इनमें अन्य चीजों के अलावा स्वास्थ्य और जननांकीय चुनौतियाँ, सामाजिक बहिष्कार और असमानता सम्मिलित है। उदाहरणस्वरूप नवाचार बड़े-बुजुर्गों को स्वस्थ रहने स्वतंत्ररूप से लम्बा जीवन जीने और उम्र के साथ बढ़ने वाले शारीरिक विसंगतियों से जूझना सीखता है। नवाचार अधिक व्यक्तिगत, भविष्यदर्शी और स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों को समक्ष ला सकता है जो मानव स्वास्थ्य के गुणवत्ता को बेहतर करते हैं। इनके अलावा, समावेशी नवाचार जो कि



विद्यमान वस्तुओं के ही वस्तुतः सतते और सुधरे रूप हैं समाज के विभिन्न तबकों के हरन सहन में अंतर को कम करते हैं। सामाजिक बहिष्कार से निपटने के अलावा नवाचार रोजगार सृजन कर सामाजिक फायदे पहुंचाता है- यह निम्न वर्गों के कुछ चुनौतियों से भी निपटता है।

नवाचारी उद्यम के विशिष्ट योगदान क्या है?

नवाचार उद्यम सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से निम्न प्रकार से रू-ब-रू हो सकता है: नवाचारी उद्यमों का सृजन और विकास गैर औपचारिक क्षेत्र में कई प्रकार से हास ला सकता है। प्रथमतः तो ये कि नवाचारी नए उद्यम गैर औपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रायः नहीं चल पाते, ऐसा इसीलिए क्योंकि औपचारिक अर्थव्यवस्था (उदाहरणतयः वित्तीय संस्थानों के

साथ सहयोग या स्थापित फर्मों के साथ सहयोग) में उच्च आगम मिलते हैं। द्वितीयतः वे रोजगार के अवसर और नवाचार को प्रस्तुत कर सकते हैं जिससे लोग प्रेरित होकर गैर औपचारिक क्षेत्र से औपचारिक में आ जाये।

उपाय

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्टतया बताते हैं कि नवाचार समाज में रोजगार के अवसरों को बढ़ाकर, सामाजिक, आर्थिक वृद्धि लाकर, आत्मनिर्भरता लाकर किसी देश के विकास को बढ़ाता है। इसीलिए शिक्षा के पाठ्यक्रम को लोगों की जरूरत के अनुसार परिवर्तित करते रहना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के बीच रचनात्मक योग्यताओं का विकास हो और उनमें नवाचारी-सोच भी पनपे, जिससे अन्ततोगत्वा देश का विकास हो।

संक्षिप्त परिचय

डा. भरत राज सिंह का जन्म, 1947 में जनपद सुल्तानपुर के एक गांव राईबीगों में हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा सुल्तानपुर व जौनपुर से हुई तथा इन्होंने बीएससी की डिग्री इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1967 में पूर्ण की। तदोपरान्त तकनीकी में ग्रेजुएट शिक्षा, यांत्रिक संवर्ग में 'सरदार वल्लभ रीजनल कॉलेज सूत गुजरात' से 1972 में, पोस्ट ग्रेजुएट, यांत्रिक संवर्ग में 'मोतीलाल रीजनल कालेज इलाहाबाद' से 1988 में व पीएचडी की उपाधि यांत्रिक संवर्ग में, गौतम बुद्ध तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से 2011 में प्राप्त की। डा. सिंह प्रारम्भ से ही 'विज्ञान व अन्वेषण' में प्रतिभावान व्यक्तित्व के धनी छात्र रहे तथा इन्हें 1965 में प्रदेश के महामहिम राज्यपाल द्वारा विज्ञान में अविष्कार हेतु अवार्ड,

प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त '1981 में वेस्ट-ऑफिसर' अवार्ड तथा 1994 में भूकम्प कार्य हेतु समाज श्री के राष्ट्रीय अवार्ड से मुम्बई में नवाजा गया। इन्हें वर्ष 2014 व 2015 में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में एअर-ओ-बाइक तथा अमेरिका में हाईस्कूल में अध्याय लागू होने तथा 2012 में अमेरिका की संस्था द्वारा लाईफ अचीवमेंट अवार्ड तथा 2016 में आब्जर्वर पीस अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डा. सिंह की पीएचडी की उपाधि ही इनके चतुर्थ पड़ाव का एक उदाहरण है। इन्होंने पर्यावरण की विश्वस्तरीय विभीषिका को कम करने हेतु हाईड्रोकार्बन ईंधन के स्थान पर 'हवा से संचालित इन्जन' का आविष्कार किया, जो इनके 2004 से 2010 तक के अथक प्रयास का फल है। इस प्रदूषण रहित इन्जन का छोटे वाहनों में उपयोग से 50-60 प्रतिशत कार्बन-उत्सर्जन में कमी का आंकलन किया गया है, जो विश्वव्यापी पर्यावरण विभीषिका को नयी दिशा देने में अग्रसर है। पाताल लोक तथा रुद्राक्ष व तुलसी की माला में 108 मनिकाओं के रहस्य की इनकी अध्ययन खोज है।

डा. सिंह के शोध के लगभग 105 पेपर्स विश्व स्तर के प्रतिष्ठित जनरल, कॉन्फ्रेंस सेमिनार की कार्य सूची में दर्ज हो चुका है। इनके द्वारा 6- किताबें तथा 9- किताबों में चैप्टर भी यूके, अमेरिका व क्रोशिया से प्रकाशित हो चुकी हैं। डा. सिंह का विशिष्ट शोध कार्य क्षेत्र: पर्यावरण से संबंधित एअर इन्जन, थर्मोडायनेमिक्स, अप्राकृतिक मैनुफैक्चरिंग, अप्राकृतिक ऊर्जा व संरक्षण आदि है, जिस पर ये निरन्तर कार्यरत है। डा. सिंह को विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित लगभग 49- जनरल व शोध संस्थानों ने 'सदस्य व सलाहकार सदस्य' भी नियुक्त कर रखा है, जिसमें ये निरन्तर योगदान दे रहे हैं। इनसे प्रतिष्ठित संस्थान एल्सवीयर के साइन्स डायरेक्ट, आईमैक, यूके, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स द्वारा निरन्तर शोध हेतु सलाह ली जा रही है।

(समाप्त)